5. कुछ महत्वपूर्ण राजवंश और कुछ महत्वपूर्ण बातें

(सन् 600 से सन् 1100 के बीच)

एक चीनी यात्री

"यहां अनाजों में धान और गेहूं बहुत होता है। अदरक, सरसों, तरह-तरह की ककड़ी और लौकी होती है। प्याज़ और लहसन बहुत कम उगाया जाता है क्योंकि बहुत कम लोग उन्हें खाते हैं। आमतौर पर दूध, मक्खन, घी, चीनी, गुड़, सरसों का तेल और रोटी खायी जाती है। मछली, बकरी, हिरन आदि का मांस भी खाया जाता है। मगर गाय, गधा, हाथी, घोड़ा, सुअर आदि का मांस खाना सख्त मना है।"

ये सब बातें आज से 1350 साल पहले एक चीनी यात्री ने लिखी थीं। उसका नाम ह्यून् त्सांग था। वह भारत में सन् 630 में आया और कई वर्ष यहां के गांव व शहरों की यात्रा की।

ह्यून् त्सांग बौद्ध धर्म के बारे में अध्ययन करने के लिए हज़ारों मील की कठिन यात्रा करके भारत आया। हां! उस समय तक बौद्ध धर्म मध्य एशिया और चीन तक फैल गया था। उन देशों से कई ऐसे यात्री भारत आते थे। ह्यून् त्सांग ने कई वर्ष तक नालंदा के प्रसिद्ध बौद्ध विहार में अध्ययन किया।

भारत के विभिन्न प्रदेशों और राजाओं के बारे में उसने अपनी पुस्तक में लिखा है। उस समय यहां तीन प्रमुख राजा थे, हर्षवर्धन, पुलकेशिन और महेन्द्रवर्मन।

सन् 600 से सन् 750 के बीच

कन्नौज नगर में राजा हर्षवर्धन शासन करता था। उसने सन् 606 से 647 तक शासन किया। पूरे उत्तर भारत में उसका आधिपत्य बन चुका था। वह अनेकों राजाओं को युद्ध में हरा चुका था। वह दक्षिण भारत पर भी विजय पाना चाहता था। मगर वहां का राजा पुलकेशिन हर्ष को रोकने में सफल रहा।

पुलकेशिन चालुक्य वंश का था और वह वातापि शहर से शासन करता था। वह भी अपना राज्य बढ़ाना चाहता था। उसने सन् 608 से 642 तक शासन किया। वह अपनी सेना के साथ दक्षिण की ओर बढ़ा। उसने कई राजाओं को हराया। फिर वह कांचीपुरम पहुंचा।

ह्यून् त्सांग

एक ताम्रपत्र पर खुदा हर्ष का हस्ताक्षर। इसमें लिखा है- "स्वहस्तो मम महाराजाधिराज श्री हर्षस्य।"

कांचीपुरम में महेन्द्रवर्मन पल्लव वंश का राजा था। वह बहुत शक्तिशाली राजा था। पुलकेशिन ने उसे भी हरा दिया। महेन्द्रवर्मन सन् 600 से 630 तक शासन करता था। कुछ वर्षों के बाद महेन्द्रवर्मन के बेटे नृसिंहवर्मन ने पुलकेशिन को हराकर मार डाला और वातापि शहर को लूटकर जला डाला।

ये राजा लड़ाई में व्यस्त तो रहते थे, मगर साथ ही वे कला और साहित्य में भी रुचि रखते थे- हर्ष के दरबार में बाणभट्ट नामक संस्कृत का कवि रहता था और कांचीपुरम में दण्डिन नाम का कथाकार हुआ करता था।

हर्ष को बौद्ध धर्म से बहुत लगाव था। चीनी यात्री ह्यून् त्सांग से उसकी गहरी दोस्ती थी। उसने बौद्ध भिक्षुओं और विहारों को खूब धन दान में दिया।

तुम्हें याद होगा बौद्ध धर्म के साथ जैन धर्म भी विकसित हुआ था। सन् 600 तक जैन धर्म भी पूरे भारत में फैल चुका था और बहुत लोग उसे मानने लगे थे। राजा पुलकेशिन और महेन्द्रवर्मन दोनों जैन धर्म को मानते थे।

पर इस समय कुछ नए धर्म भी उभरकर आ रहे थे- जैसे वैष्णव धर्म (विष्णु की भक्ति) और शैव धर्म (शिव की भक्ति)। राजा महेन्द्रवर्मन ने अप्पर नामक एक शैव संत के प्रभाव में आकर जैन धर्म छोड़ दिया और शैव धर्म अपना लिया। उसने और उसके बेटे नृसिंहवर्मन ने बड़ी-बड़ी चट्टानों को खुदवाकर बहुत सुन्दर मंदिर भी बनवाये।

पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूट वंश (सन् 750 से सन् 1000)

सन् 750 से 1000 के बीच भारत में तीन बड़े साम्राज्य बने- एक बंगाल में पाल वंश का साम्राज्य, दूसरा उत्तर भारत में प्रतिहार वंश का साम्राज्य और तीसरा महाराष्ट्र में राष्ट्रकूट वंश का साम्राज्य। तीनों शक्तिशाली साम्राज्य थे और इनका आपस में लगातार संघर्ष चलता रहा। तीनों भारत में सर्वे-सर्वा बनना चाहते थे। मगर हरेक को दूसरे दो राजाओं का सामना करना पड़ता था। कोई

मिट्टी के फलक पर बना युद्ध का चित्र

भी राजा बाकी दोनों को हराकर सर्वे-सर्वा नहीं बन सका। इन राज्यों की लड़ाई लगभग 250 वर्ष चलती रही और इसी के कारण तीनों की शक्ति नष्ट हो गयी।

सन् 1000 से 1200 के बीच

दूर दक्षिण में तमिलनाडु में एक बड़ा शक्तिशाली राज्य बना। चोल वंश के इस साम्राज्य के प्रमुख राजा थे- राजराज चोल (सन् 985 से 1014 तक) राजेन्द्र चोल (सन् 1014 से 1044) और कुलोत्तुंग चोल (सन् 1070 से 1118)। इन्होंने न केवल दक्षिण भारत के राजाओं को हराकर अपने साम्राज्य का विस्तार किया बल्कि श्रीलंका, मलेशिया, इंडोनेशिया के राज्यों को भी हराकर अपने अधिकार में किया। इन राजाओं ने बड़े ही खूबसूरत मंदिर बनवाए।

उसी समय मध्यप्रदेश में परमार वंश के राजाओं ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। इस वंश का सबसे प्रसिद्ध राजा था- भोज। भोज ने सन् 1000 से 1035 तक शासन किया। भोज एक पराक्रमी राजा होने के साथ-साथ विज्ञान और साहित्य और वास्तु कला (यानी इमारतें बनाने की कला) में गहरी रुचि रखता था। राजा भोज ने उस समय के यंत्रों (मशीनों) पर एक पुस्तक भी लिखी थी। उसने अपनी राजधानी धारा में सरस्वती का मंदिर बनवाया जहां आये दिन विद्वानों की चर्चा चलती रहती थी। यह इमारत आज भोजशाला के नाम से प्रसिद्ध है।

इसी समय अफगानिस्तान में एक शक्तिशाली राजा बना जिसका नाम था- महमूद गज़नी। वह सन् 997 से 1010 तक बार-बार उत्तर भारत के राज्यों पर आक्रमण करके धन लूटकर जाता था। महमूद के राज्य में एक बड़ा विद्वान था जिसका नाम था अलबिरूनी। वह गणित, खगोलशास्त्र, (यानी तारों और ग्रहों का ज्ञान) और अलग-अलग धर्मों का गहराई से अध्ययन करना चाहता था। उसने सुना था कि भारत में गुप्त राजाओं के समय में गणित और खगोलशास्त्र के बड़े विद्वान हुए थे। वह उनकी किताबों का अध्ययन करने के लिए भारत आया। यहां आकर अलबिरूनी ने संस्कृत सीखी और कई वर्ष जगह-जगह जाकर पुरानी पुस्तकों का अध्ययन किया। फिर अपने देश में लौटकर उसने सन् 1030 में एक किताब लिखी जिसमें उसने भारत के लोग, उनके धर्म, रीति-रिवाज़, विज्ञान, गणित, और खगोलशास्त्र आदि के बारे में लिखा।

एक नया शब्द सीखो

"समकालीन" : इसका अर्थ है "समान काल का" यानी "उसी समय का"। जैसे राजा हर्ष और चीनी यात्री ह्यून् त्सांग एक ही समय में थे।

हम कह सकते हैं- हर्ष और ह्यून् त्सांग समकालीन थे। तुम हर्ष के समकालीन नहीं हो - सही है ना?

इन वंशों का समकालीन कौन था- सूची में से छाँटो-

चालुक्य वंश का समकालीन -

पाल वंश का समकालीन -

परमार वंश का समकालीन -

सूची : अलबिरूनी, महेन्द्रवर्मन, ह्यून् त्सांग, राजेन्द्र चोल, राष्ट्रकूट वंश, हर्ष, प्रतिहार वंश, महमूद गज़नी।

अभ्यास के प्रश्न

1. सन् 600 से सन् 750 के समय में किन प्रमुख राजाओं के बीच युद्ध हुए?
2. सन् 750 से सन् 1000 के समय में किन प्रमुख वंशों के बीच युद्ध हुए?
3. क) सन् 600 से सन् 1000 के बीच किन पुराने धर्मों का प्रभाव था? किन नए धर्मों का प्रभाव बढ़ने लगा?
   ख) नए धर्मों का प्रभाव बढ़ने लगा था- इस बात का क्या उदाहरण तुमने पढ़ा?
4. सन् 600 से सन् 1200 के बीच किन देशों के यात्री भारत आए? उनके नाम क्या थे? वे भारत क्यों आए थे?
5. किस वंश के राजाओं ने भारत के बाहर भी अपना राज्य बनाया? कहां पर ?
6. राजा भोज का राज्य किस क्षेत्र में था? उसकी राजधानी क्या थी? वह किन बातों में रुचि रखता था?